सूरह — एक कहानी

सूरह अल-इंफ़ितार

फट पड़ना

पूरा सफ़र — अपने रब-ए-करीम के मामले में किस चीज़ ने धोका दिया? —
जैसे कोई बड़े प्यार से बच्चे को सुनाता है

सूरह नं. 82 • 19 आयतें • मक्की

नूरानी इल्म
nooraniilm.com • मुफ़्त सदक़ा-ए-जारिया ईबुक

एक नज़र में सूरह

इज़स्-समा-उन्-फ़तरत
1. जब आसमान फट पड़ेगा।

'अलिमत नफ़्सुम्-मा क़द्दमत व अख़्ख़रत
5. हर नफ़्स जान लेगा जो उसने आगे भेजा और जो पीछे छोड़ा।

या अय्युहल्-इंसानु मा ग़रर्क बि-रब्बिकल्-करीम
6. ऐ इंसान! किस चीज़ ने तुझे अपने रब-ए-करीम के मामले में धोका दिया?

अल्लज़ी ख़लक़क फ़-सव्वाक फ़-'अदलक
7. जिसने तुझे पैदा किया, ठीक बनाया, फिर मुतवाज़िन किया।

व इन्न 'अलैकुम ल-हाफ़िज़ीन। किरामन कातिबीन
10-11. और बेशक तुम पर निगहबान हैं, इज़्ज़त वाले लिखने वाले।

यौम ला तम्लिकु नफ़्सुल्-लि-नफ़्सिन शै-आ
19. जिस दिन कोई नफ़्स किसी नफ़्स के लिए कुछ इख़्तियार न रखेगा।

छत बिखर जाती है

बेटा, यह सूरह चार मंज़रों से शुरू होती है, और हर एक उस चीज़ को ले कर तोड़ देता है जिसे हम दाइमी समझते हैं।

'इज़स्-समा-उन्-फ़तरत — जब आसमान फट पड़ेगा।' बेटा, 'इंफ़तरत' का मतलब है चीर कर खुल जाना — वही मादा जिससे 'फ़ित्र' है, रोज़े का खोलना, और 'फ़ातिर', वो ज़ात जो चीर कर वुजूद में लाती है। वो अज़ीम छत जो आपके ऊपर है, जिसमें इसी क़ुरआन ने आपको चैलेंज दिया था कि कोई झोल ढूँढ कर दिखाओ और कोई नहीं मिलेगा — वो सबसे पहले चीज़ होगी जो चीर दी जाएगी।

'व इज़ल्-कवाकिबुन्-तसरत — और जब सितारे बिखर जाएँगे।' बिखर जाएँगे, बेटा, जैसे मोतियों की टूटी हुई लड़ी — रात के आसमान के जमे हुए नुक़्ते ढीले हो कर गिरते हुए।

'व इज़ल्-बिहारू फ़ुज्जिरत — और जब समुंदर फाड़ दिए जाएँगे' — उनकी रुकावटें तोड़ दी जाएँगी, वो पानी जिसे अल्लाह अभी अपनी जगह थामे हुए हैं खोल दिया जाएगा।

'व इज़ल्-क़ुबूरू बु'सिरत — और जब क़ब्रें उलट दी जाएँगी।' बेटा, यही वो है जो आपसे सीधा ताल्लुक़ रखती है। 'बु'सिरत' का मतलब है किसी चीज़ को उलट देना, उसका अंदर बाहर कर देना। हर मुल्क की हर क़ब्र — निशान वाली और भूली हुई, बादशाहों की संगमरमर की क़ब्रें और ग़रीबों के बे-निशान गढ़े — ख़ाली कर दी जाएँगी।

और फिर वो जुमला जिसकी तरफ़ ये चारों मंज़र ले जा रहे थे: "अलिमत नफ़्सुम्-मा क़द्दमत व अख़्ख़रत — हर नफ़्स जान लेगा जो उसने आगे भेजा और जो पीछे छोड़ा।'

बेटा, दोनों हिस्से ग़ौर से देखिए। 'क़द्दमत' — जो आपने आगे भेजा: नमाज़ें, सदक़ा, गुनाह, नेकियाँ। और 'अख़्ख़रत' — जो आपने पीछे छोड़ा: वो नेकी जो आपने टाल दी, और वो असरात भी जो आपके जाने के बाद दुनिया में चलते रहे — एक बच्चा जिसे आपने सिखाया, एक रीत जो आपने शुरू की, एक नुक़सान जो आप चलता हुआ छोड़ गए। दोनों कॉलम गिने जाते हैं।

किस चीज़ ने धोका दिया?

और अब, बेटा, एक ऐसी आयत आती है जिस पर उलमा सदियों रोए हैं — पूरे क़ुरआन के सबसे नरम और सबसे होला देने वाले सवालों में से एक:

'या अय्युहल्-इंसानु मा ग़र्रक बि-रब्बिकल्-करीम — ऐ इंसान! किस चीज़ ने तुझे अपने रब-ए-करीम के मामले में धोका दिया?'

बेटा, पहले ख़िताब सुनिए: 'या अय्युहल्-इंसान' — ऐ इंसान। 'ऐ काफ़िर' नहीं, 'ऐ गुनहगार' नहीं। वो हमें हमारी नौ (species) के नाम से पुकारते हैं, जैसे एक बाप ग़ुस्से के बजाय मायूसी में अपने बच्चे को उसके पहले नाम से पुकारे।

और फिर सवाल: किस चीज़ ने तुझे धोका दिया? किस चीज़ ने तुझे दिलेर बनाया? किसने तुझे यक़ीन दिलाया कि ना-फ़रमानी करना महफ़ूज़ है?

और फिर — बेटा, यही वो हिस्सा है जो दिलों को तोड़ देता है — वो ये नहीं कहते 'अपने रब, ज़बरदस्त के मामले में' या 'सज़ा देने में सख़्त के मामले में'। वो कहते हैं: 'बि-रब्बिकल्-करीम' — अपने रब, सबसे ज़्यादा करीम के मामले में।

सुब्हानल्लाह। वो अपनी करम-नवाज़ी का ज़िक्र ठीक उसी आयत में करते हैं जिसमें वो हमारी ना-फ़रमानी पर हमसे बात कर रहे हैं। गोया वो फ़रमा रहे हों: क्या मेरी ही मेहरबानी ने तुझे लापरवाह बना दिया? क्या मेरा तेरे ऐबों को ढाँपना तुझे ये समझा बैठा कि मैंने देखा ही नहीं? क्या इस बात ने कि मैं तेरे ना-फ़रमानी करते हुए भी देता रहा, तुझे यक़ीन दिला दिया कि कोई हिसाब ही नहीं होगा?

उलमा से जब पूछा गया कि इस सवाल का जवाब क्या दिया जाए, तो उन्होंने आजिज़ी से जवाब दिए। एक ने कहा जवाब ये है: मुझे किसी चीज़ ने धोका नहीं दिया सिवाए आपकी अपनी करम-नवाज़ी के, या रब्ब। दूसरे ने कहा: ये उसका 'सित्र' है — पर्दा-पोशी — जो इंसान को दिलेर बनाती है, क्योंकि अल्लाह हमारे गुनाह लोगों से छुपा देते हैं, और हम उनके छुपाने को उनकी रज़ामंदी समझ बैठते हैं।

बेटा, ये एक रहीम रब का जाल है: उनका सब्र इतना लंबा है कि बेवकूफ़ उसे ग़ैर-हाज़िरी समझ बैठते हैं। हर रोज़ सूरज उस शख़्स पर चढ़ता है जिसने रात भर ना-फ़रमानी की; हर रोज़ उसे खिलाया जाता है, शिफ़ा दी जाती है, हिफ़ाज़त की जाती है, और उसका राज़ रखा जाता है। और शर्म से पिघलने के बजाय, वो और दिलेर हो जाता है।

पैदा किया, ठीक बनाया, मुतवाज़िन किया

और फिर अल्लाह हमें याद दिलाते हैं कि ये करीम रब हैं कौन, तीन अफ़आल में जो आपके अपने जिस्म का बयान करते हैं: 'अल्लज़ी ख़लक़क — जिसने तुझे पैदा किया — फ़-सव्वाक — फिर ठीक बनाया — फ़-'अदलक — फिर मुतवाज़िन किया।'

बेटा, इसे पढ़ते हुए अपने आप को देखिए। 'ख़लक़क' — तुझे कुछ नहीं से लाया। 'सव्वाक' — तुझे शक्ल दी: तुझे एक चेहरा दिया जिसके नक़्श इतनी बारीकी से रखे गए कि अरबों इंसानों में से दो चेहरे आपस में नहीं मिलते। "अदलक' — तुझे

मुतवाज़िन किया: दोनों आँखें एक ही ऊँचाई पर, दोनों बाज़ू एक ही लंबाई के, दोनों तरफ़ कान, एक ऐसा जिस्म जो सीधा खड़ा रहता है — तवाज़ुन की ऐसी इंजीनियरिंग कि आपने कभी एक बार भी उनका शुक्र नहीं किया कि आपका बायाँ पाँव दाएँ से मिलता है।

'फ़ी अय्यि सूरतिम्-मा शा-अ रक्कबक — जिस सूरत में वो चाहते, तुझे जोड़ दिया।' आपका क़द, आपका रंग, आपके नक़्श, आपकी आवाज़ — इनमें से कुछ भी आपका फ़रमाइश शुदा नहीं था; सब उनकी डिज़ाइन का इंतिख़ाब था। और वो अल-करीम हैं, बेटा, तो आपके लिए उनका इंतिख़ाब करम-नवाज़ी वाला था, चाहे आईना या दुनिया कुछ भी कहे।

फिर: 'कल्ला बल तुकज़्ज़िबून बिद्-दीन — हरगिज़ नहीं! बल्कि तुम बदले के दिन को झुठलाते हो।' बेटा, यही जड़ है हर लापरवाह ज़िंदगी के नीचे: दिमाग़ का शक नहीं, बल्कि अमली इनकार — इस तरह जीना जैसे हिसाब कभी पेश होगा ही नहीं।

इज़्ज़त वाले लिखने वाले

और फिर अल्लाह हमें एक ऐसी हक़ीक़त बताते हैं जिसे हम हर घंटे भूल जाते हैं: 'व इन्न 'अलैकुम ल-हाफ़िज़ीन — और बेशक तुम पर निगहबान हैं — किरामन कातिबीन — इज़्ज़त वाले, लिखने वाले — य'लमून मा तफ़्अ'लून — वो जानते हैं जो तुम करते हो।'

बेटा, ग़ौर कीजिए कि अल्लाह ने उनके बारे में क्या कहना चुना: वो किराम हैं — इज़्ज़त वाले, बा-वक़ार। उनकी इज़्ज़त का ज़िक्र क्यों? उलमा एक ख़ूबसूरत बात कहते हैं: क्योंकि उनकी इज़्ज़त को आपको शर्माना चाहिए। अगर आपको पता हो कि दो बा-इज़्ज़त, मोअज़्ज़ज़ मेहमान हर लम्हा आपके पहलू में बैठे हैं, तो आप उनके सामने गंदी बात नहीं करेंगे, आप वो नहीं खोलेंगे जो आप तन्हाई में खोलते हैं, आप वैसे पेश नहीं आएँगे जैसे आप तब आते हैं जब समझते हैं कि आप अकेले हैं। आप कभी अकेले नहीं हैं, बेटा। आप एक बार भी कभी अकेले नहीं रहे।

और 'कातिबीन' — लिखने वाले। सिर्फ़ देखते नहीं: लिखते हैं, एक ऐसे दस्तावेज़ में जो

आपके हाथ में दिया जाएगा। हर टाइप किया गया लफ़्ज़, हर नज़र, हर तन्हाई का लम्हा — एक बा-इज़्ज़त हाथ से लिखा जा रहा है।

तो जब कोई शख़्स गुनाह करने वाला हो, बेटा, ये आयत उसे दुनिया की सबसे सादा रुकावट दे देती है: दो इज़्ज़त वाले लिखने वाले इसे अभी लिखने वाले हैं, और मैं इसे बाद में सब के सामने पढ़ूँगा।

दो रजिस्टर, दो मंज़िलें

फिर सूरह आख़िरी तक़सीम खींचती है, और वो साफ़ और मुख़्तसर है: 'इन्नल्-अब्रार ल-फ़ी न'ईम — बेशक नेक लोग नेमत में होंगे। व इन्नल्-फ़ुज्जार ल-फ़ी जहीम — और बेशक बदकार जहन्नम में होंगे।'

'यस्लौनहा यौमद्-दीन — वो उसमें बदले के दिन जलेंगे — व मा हुम 'अन्हा बि-ग़ाइबीन — और वो उससे ग़ाइब (दूर) न होंगे।' बेटा, ये आख़िरी जुमला हर भागने का रास्ता बंद कर देता है: न छुट्टी, न ज़मानत, न ग़ैर-हाज़िरी।

और फिर सूरह कुछ ऐसा करती है जो ख़ुद एक तरीक़ा-ए-तालीम है। वो दो बार पूछती है: 'व मा अद्राक मा यौमुद्-दीन — और आपको क्या मालूम कि बदले का दिन क्या है? सुम्म मा अद्राक मा यौमुद्-दीन — फिर, आपको क्या मालूम कि बदले का दिन क्या है?'

सवाल दोहराया गया, बेटा — क्योंकि हक़ीक़त बयान से परे है, और ख़ुद तिकरार ही वो वाहिद तरीक़ा है जिसमें ज़ुबान किसी ऐसी चीज़ की तरफ़ इशारा कर सकती है जो लफ़्ज़ों के लिए बहुत बड़ी है।

और फिर जवाब आता है — और देखिए अल्लाह ने उस दिन के बारे में हर उस चीज़ में से जो वो कह सकते थे, क्या कहना चुना: 'यौम ला तम्लिकु नफ़्सुल्-लि-नफ़्सिन शै-आ — उस दिन कोई नफ़्स किसी नफ़्स के लिए कुछ इख़्तियार न रखेगा — वल्-अम्रु यौम-इज़िल्-लिल्लाह — और उस दिन हुक्म सिर्फ़ अल्लाह का होगा।'

बेटा, उस दिन के सारे ख़ौफ़ों में से — आग, तराज़ू, पुल — अल्लाह ने इसे यूँ ख़ुलासा

किया: कोई किसी के लिए कुछ नहीं कर सकेगा। सोचिए ये हमारे लिए कितना अजीब है। हमारी पूरी ज़िंदगी ताल्लुक़ात पर चलती है: बाप का असर, दोस्त की मदद, चचा की सिफ़ारिश, वो पैसा जो दरवाज़े खोल देता है। वो पूरा निज़ाम एक आयत में बंद कर दिया गया।

और ये शफ़ाअत का इनकार नहीं है — क़ुरआन और सुन्नत साबित करती हैं कि शफ़ाअत होगी, मगर सिर्फ़ अल्लाह की इजाज़त से और सिर्फ़ उनके लिए जिनसे वो राज़ी हों। आयत हमें ये बता रही है: उस दिन किसी के पास अपनी ख़ुद-मुख़्तार ताक़त नहीं होगी।

तो सूरह वो दायरा बंद कर देती है जो उसने खोला था, बेटा। इसकी इब्तिदा आसमान के चीरने और क़ब्रों के ख़ाली होने से हुई, और इसका इख़्तिताम एक नफ़्स के अपने रब के सामने ख़ामोश, मुकम्मल तन्हाई पर होता है। और इस सब के बीच में खड़ा है वो न-भूलने वाला सवाल: **मा ग़रّक बि-रब्बिकल-करीम** — किस चीज़ ने तुझे अपने रब-ए-करीम के मामले में धोका दिया?

इस सूरह से क्या सीखा

1. दोनों कॉलम गिने जाते हैं: जो आपने आगे भेजा, और जो आपने पीछे छोड़ा — उस टाली हुई नेकी और उन असरात समेत जो आपके बाद चलते रहे।

2. उनकी करम-नवाज़ी को कभी उनकी ग़ैर-हाज़िरी मत समझिए: आपके गुनाहों का ढाँपना एक रहमत है, रज़ामंदी नहीं।

3. अपने जिस्म को दलील की तरह पढ़िए — पैदा किया, ठीक बनाया, मुतवाज़िन किया, एक ऐसी सूरत में जोड़ा गया जो उन्होंने करम से चुनी।

4. लापरवाह ज़िंदगी बदले के दिन का अमली इनकार है, चाहे ज़ुबान उसे मानती रहे।

5. दो इज़्ज़त वाले लिखने वाले हमेशा आपके साथ बैठे हैं — उनकी इज़्ज़त ही आपको आपके क़ौल-ओ-फ़े'ल से शर्माने पर काफ़ी होनी चाहिए।

6. हर गुनाह से पहले सबसे सादा रुकावट इस्तेमाल कीजिए: ये अभी लिखा जाने

वाला है, और मैं इसे सब के सामने पढ़ूँगा।

7. उस दिन कोई नफ़्स किसी के लिए कुछ नहीं रखता — अपना हिसाब अभी बना लीजिए, क्योंकि कोई ताल्लुक़ उसे नहीं चलाएगा।

या रब्बल-करीम, अपनी करम-नवाज़ी को हमें धोका न देने दीजिए — बल्कि उसे हमें पिघला देने दीजिए, और हमारे लिखने वालों से वो लिखवाइए जो हमें ख़ुश कर दे। आमीन।